विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

शिखा श्रीवास्तव*
किशोर हरिश्चन्द्र माने**

शिक्षा मनुष्य के जीवन को सार्थक दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि का निर्धारण तथा उसका अध्ययन, आदतों एवं उसे प्राप्त होने वाले अभिभावकीय प्रोत्साहन से होता है। इसके लिए अन्य कारक भी उत्तरदायी होते हैं, जैसे — मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति आदि। वर्तमान समय में विश्व अधिक प्रतियोगी होता जा रहा है और इसी संदर्भ में प्रत्येक अभिभावक यह चाहता है कि उनके बच्चे सफलता के शीर्ष स्तर पर पहुँचे, परंतु उपलब्धि के उच्च स्तर की इच्छा, बच्चों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा विद्यालय पर एक दबाव का निर्माण करती है। अतः बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित कारकों का अध्ययन करना और उन कारकों के प्रभाव को समझना बहुत आवश्यक हो गया है। यह शोध पत्र भी इसी आवश्यकता पर आधारित है। जो शोध की वर्णनात्मक सर्वे विधि पर आधारित है। जिसमें वाराणसी शहर के सी.बी.एस.ई. बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 के सभी विद्यार्थी जनसंख्या के रूप में लिए गए थे। प्रतिदर्श का चयन उद्देश्यपूर्ण-सह-प्रासंगिक प्रतिदर्शन विधि (Purposive-Cum-Convenience) द्वारा किया गया था। प्रदत्त संकलन हेतु अभिभावकीय प्रोत्साहन के मापन हेतु कुसुम अग्रवाल द्वारा निर्मित "अग्रवाल अभिभावकीय प्रोत्साहन मापनी" तथा अध्ययन आदत के मापन हेतु डिम्पल रानी और एम.एल. ज़ैद द्वारा निर्मित "अध्ययन आदत मापनी" का प्रयोग किया गया था। इसके साथ, शोध में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के रूप में पूर्व परीक्षा (कक्षा 10) में प्राप्त अंकों के प्रतिशत को प्रयुक्त किया गया था। परिणामों के सूक्ष्म अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत, शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक रूप से सह-संबंधित हैं।

प्रस्तावना

शिक्षा एक महत्वपूर्ण मानवीय सृजन एवं परिवर्तन का सशक्त साधन है। मनुष्य शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य बनता है। वर्तमान समय में बच्चे वैसे तो बहुत समझदार होते हैं, परंतु आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में अभिभावक अपने बच्चों को पर्याप्त समय एवं ध्यान नहीं दे पाते। अपनी ज़िम्मेदारियों के निर्वहन में वे उनको अच्छे विद्यालय में भेजते हैं, उनकी सभी ज़रूरतों को पूरा करते हैं और उनको एक बहुमुखी व्यक्ति के रूप में देखना चाहते हैं। परंतु आज के संदर्भ में विद्यालय में संपूर्ण शिक्षा नहीं मिल पा रही है तथा घर पर भी बच्चों की शिक्षा पर ध्यान देना

* *शोधार्थी*, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश – 221 005
** *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश – 221 005

ज़रूरी है। वास्तव में, माता-पिता ही बच्चे के प्रथम शिक्षक होते हैं और बच्चे जैसे ही अपनी शैक्षिक यात्रा आरंभ करते हैं, माता-पिता इस यात्रा के प्रत्येक चरण में मार्गदर्शक का कार्य करते हैं। माता-पिता का प्रोत्साहन बच्चों में छिपी हुई क्षमताओं का पोषण करता है, जो उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। शैक्षिक उपलब्धि एवं निष्पादन, शिक्षा के महत्वपूर्ण लक्ष्यों में से एक है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि माता-पिता के प्रोत्साहन एवं विद्यालयी वातावरण सहित अन्य कारकों से प्रभावित होती है।

लारेंस और बराढ़ी (2016) का मत है कि — "बच्चों के जीवन गठन में अभिभावकीय प्रोत्साहन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यह उन्हें जीवन की भावी चुनौतियों का सामना करने के योग्य बनाता है। इसमें कई पक्ष सम्मिलित होते हैं, जैसे — विकासात्मक प्रक्रिया की गहन समझ, स्वभाव की समझ, बुद्धि, व्यक्तित्व, क्रियाएँ और समाजीकरण आदि।" इसके अतिरिक्त बिलकिस अब्दुल्ला पुजु (2017) ने अपने शोध पत्र में कहा है कि, वर्तमान समय में विश्व अधिक प्रतियोगी बनता जा रहा है। निजी प्रगति के लिए निष्पादन की गुणवत्ता महत्वपूर्ण कारक बन चुका है। सामान्यतः अभिभावक यह इच्छा करते हैं कि जहाँ तक संभव हो उनके बच्चे सफलता के उच्चतम स्तर को प्राप्त कर सकें। उपलब्धि के उच्च स्तर की इच्छा बच्चों, शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यालयों पर एक दबाव का निर्माण करती है। दूसरे शब्दों में, यह पूरी शिक्षा व्यवस्था पर दबाव बनाती है।

आज ऐसा प्रतीत होता है कि संपूर्ण शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर ही केंद्रित हो गई है। जबकि इसके अलावा भी अन्य कई महत्वपूर्ण पक्ष हैं जिनकी शिक्षा प्रणाली से अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षिक उपलब्धि हेतु विद्यालयों तथा अभिभावकों को बहुत प्रयास करना पड़ता है। बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को बेहतर बनाने के लिए वे परामर्शदाता से भी परामर्श लेते हैं और दिन-रात अपने बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को लेकर चिंतित रहते हैं। अधिगम और अकादमिक निष्पादन किसी एक कारण से निर्देशित नहीं होता, बल्कि कई ऐसे कारक हैं जिनके द्वारा बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। इन कारकों में व्यक्तित्व, बुद्धि, पारिवारिक पृष्ठभूमि, जेंडर, आयु आदि, इसके साथ ही अर्जित कारक, जैसे — अधिगम शैली और अध्ययन की विधियाँ आदि भी सम्मिलित हैं। वस्तुतः एक विद्यार्थी का पढ़ाई करने का ढंग, तैयारी का स्तर एवं अधिगम युक्तियाँ आदि उपलब्धि स्तर को प्रभावित करते हैं। इस संबंध में मार्क और हावर्ड (2009) का मत है कि विद्यार्थियों की सफलता की जटिलताओं में सबसे सामान्य चुनौती प्रभावकारी या धनात्मक (उत्तम) अध्ययन आदतों की कमी है। उन्होंने आगे बताया कि यदि विद्यार्थी अच्छे अनुशासन के साथ अच्छी अध्ययन आदत का विकास कर सके तो वह अपने शैक्षिक वातावरण में हर क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन कर सकता है।

कैटलन (2013) का भी मत है कि निस्संदेह रूप से विभिन्न व्यक्ति भिन्न-भिन्न विधियों से अध्ययन करते हैं और यह आवश्यक नहीं है कि एक विधि एक व्यक्ति के लिए कारगर हो तो वह दूसरे व्यक्तियों के लिए भी कारगर होगी। कैटलन ने 14 सकारात्मक व अच्छी अध्ययन आदतों की पहचान की है, जिन्हें

विद्यार्थी अपनी शैक्षिक उपलब्धि एवं निष्पादन को सुधारने हेतु अपना सकते हैं। इस संबंध में जॉन (2010) के अनुसार नकारात्मक या बुरी अध्ययन आदतें वे हैं जो दोषपूर्ण एवं अनुत्पादक अध्ययन को बढ़ावा देती हैं, जो विद्यार्थी में अवांछनीय व्यवहार परिवर्तन लाती हैं।

अतः उक्त शोध निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि में संबंध होता है। अतएव शैक्षिक उपलब्धि मात्र अध्ययन आदत से ही नहीं, अपितु अन्य व्यक्तिगत कारकों, सामाजिक कारकों, पारिवारिक कारकों आदि से भी प्रभावित होती है। अतः शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को उच्च करने हेतु विभिन्न कारकों से इसके संबंध को समझने की आवश्यकता है।

इस प्रकार उपरोक्त अध्ययनों से यह तथ्य पूर्णतः स्पष्ट होता है कि बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अतः इस विषय की महत्ता के कारण शोध अध्ययन हेतु 'उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन' समस्या का चयन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य थे —

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत के सहसंबंध के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

शून्य परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की शून्य परिकल्पनाएँ थीं —

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन आदत एवं अभिभावकीय प्रोत्साहन से प्राप्त सहसंबंध गुणांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन विधि

यह शोध, शोध की वर्णनात्मक विधि पर आधारित है। इसमें वर्णनात्मक सर्वे विधि का प्रयोग किया गया था।

जनसंख्या

वर्तमान शोध हेतु वाराणसी शहर के सी.बी.एस.ई. द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 के सभी विद्यार्थी जनसंख्या के रूप में लिए गए थे।

प्रतिदर्श

प्रतिदर्श का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रासंगिक प्रतिदर्शन विधि (Purposive-cum-Convenience Method) द्वारा किया गया था।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

शोध हेतु प्रदत्तों के संकलन हेतु अभिभावकीय प्रोत्साहन के मापन के लिए कुसुम अग्रवाल द्वारा निर्मित "अग्रवाल अभिभावकीय प्रोत्साहन मापनी" तथा अध्ययन आदत के मापन हेतु डिम्पल रानी और एम.एल. ज़ैद द्वारा निर्मित "अध्ययन आदत मापनी" का प्रयोग किया गया था। इसके साथ ही शैक्षिक उपलब्धि के रूप में विद्यार्थियों के पूर्व परीक्षा में प्राप्त अंकों के प्रतिशत को शोध में प्रयुक्त किया गया था।

आँकड़ों का विश्लेषण, व्याख्या और विवेचन

इस शोध अध्ययन में वाराणसी शहर के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को प्रतिदर्श में सम्मिलित किया गया। इसमें मात्र वे विद्यार्थी ही चयनित किए गए जो सी.बी.एस.ई. द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में पढ़ रहे थे। कुल प्रतिदर्श संख्या 100 थी। शोध के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सर्वप्रथम आँकड़ों की प्रकृति को जानना आवश्यक है कि वे सामान्यीकृत रूप से वितरित थे अथवा नहीं।

उद्देश्य 1—उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना बनाई गई कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है। दोनों चरों के मध्य सहसंबंध ज्ञात करने हेतु पीयरसन सहसंबंध विधि का चयन किया गया। दोनों चरों के मध्य प्राप्त सहसंबंध गणना का विवरण तालिका 2 में दिया गया है।

तालिका 1 से स्पष्ट है कि प्रतिदर्श विद्यार्थियों के अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्राप्त सहसंबंध गुणांक r का मान 0.60 है, जो कि परिमित धनात्मक सहसंबंध है तथा यह 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक सहसंबंध को दर्शाता है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत नहीं की जाती है। अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसंबंध प्राप्त होने का कारण यह है कि अनुकूलित गृह पर्यावरण में विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में प्रोत्साहन, शैक्षिक सुविधाएँ, मार्गदर्शन, माता-पिता द्वारा प्राप्त अनुभव आदि उच्चतर शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।

इस क्षेत्र में किए गए अन्य शोधों से भी इस शोध अध्ययन के प्राप्त परिणामों की पुष्टि होती है। मंगल सिंह (2016) ने अपने अध्ययन के परिणामों में पाया कि अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध है। इसके अतिरिक्त भावना और मनदीप कौर (2015) ने भी अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सहसंबंध है। इसी

तालिका 1 — उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध

चर	N	सहसंबंध गुणांक 'r'	सहसंबंध की शाब्दिक व्याख्या	सारिणी मान 'r'
अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि	100	0.60*	परिमित धनात्मक सहसंबंध	r = .195

*0.05 सार्थकता स्तर

संदर्भ में अन्य शोधकों, विलकिस पुजु अब्दुल्ला (2017), निवेदिता और दीपिका (2017), नेगी अंजना और रमा मोखरी (2016), एस.एस. लारेंस और सी. बराठी (2016) ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है कि अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध है।

उद्देश्य 2—उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना

शोध अध्ययन का उद्देश्य — उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना था। जिसके लिए शून्य परिकल्पना "उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध नहीं है" बनाई गई तथा दोनों चरों के मध्य सहसंबंध को ज्ञात करने हेतु गुणनफल-आघूर्ण सहसंबंध विधि (Product Moment Correlation Method) का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों को तालिका 2 में दिया गया है।

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की (N=100) अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्राप्त सहसंबंध गुणांक 'r' का मान 0.30 है, जो कि परिमित (moderate) धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत नहीं की जाती है। अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सहसंबंध इस बात का संकेत है कि अध्ययन आदत का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है और इसका कारण है कि उत्तम अध्ययन आदत, विद्यार्थी को अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करती है तथा उसे उच्च उपलब्धि की प्राप्ति में सहायक होती है। इस शोध परिणाम की भाँति ही कई अन्य शोधकों ने भी अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसंबंध ज्ञात किए। इस शृंखला में के.के. झा और वाई भूटिया (2012) ने अध्ययन आदत एवं गणित विषय में उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध ज्ञात किया। इसी प्रकार रत्ना गुप्ता (2016), ए.एस.ए. लारेंस (2014), मिगुल, ए. सरना, पाल्ल्यूश, सी. के. (2015), एवेल उजू एफ़ और ओलोफ़ू पॉल, ए. (2017), कौर अमनदीप पठानिया राज (2017) ने भी शोध अध्ययन परिणामों में इस तथ्य की पुष्टि की है कि अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध होता है।

उद्देश्य 3—उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत के सहसंबंध का तुलनात्मक अध्ययन करना

इस अध्ययन के संदर्भ में अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत का शैक्षिक उपलब्धि से प्राप्त

तालिका 2— उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध

चर	N	सहसंबंध गुणांक 'r'	सहसंबंध की शाब्दिक व्याख्या	प्राप्त सारिणी मान 'r'
अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि	100	0.30*	परिमित धनात्मक सहसंबंध	r = .195

*0.05 सार्थकता स्तर

सहसंबंध गुणांक के अंतर की सार्थकता जानने हेतु परिकल्पना बनाई गई कि," उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत से प्राप्त सहसंबंध गुणांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।" इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु सर्वप्रथम तीनों चरों के मध्य सहसंबंध गुणांक की गणना की गई तत्पश्चात् टी-परीक्षण क्रियान्वित किया गया जिसका विवरण तालिका 3 में दिया गया है।

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्राप्त सहसंबंध गुणांक का मान 0.61 है। अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्राप्त सहसंबंध गुणांक का मान 0.30 है तथा अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत के मध्य प्राप्त सहसंबंध गुणांक का मान 0.49 है तथा इन तीनों सहसंबंध गुणांकों के मध्य प्राप्त 't' का मान 1.53 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर आवश्यक न्यूनतम 't'-मान 1.98 से कम है। अतः यह स्पष्ट है कि शैक्षिक उपलब्धि का अन्य दो चरों, अध्ययन आदत एवं अभिभावकीय प्रोत्साहन के साथ प्राप्त सहसंबंध गुणांक के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट है कि शैक्षिक उपलब्धि के साथ अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत का लगभग समान सहसंबंध है।

इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण एवं विवेचन से स्पष्ट है कि अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत शैक्षिक उपलब्धि के निर्धारक तत्व हैं और दोनों से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का धनात्मक सहसंबंध है। इसके साथ ही परिणामों से यह भी स्पष्ट है कि शैक्षिक उपलब्धि का संबंध अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत, दोनों से लगभग समान ही है और जो अंतर है भी, वह बहुत कम है जिसे नगण्य माना जा सकता है।

निष्कर्ष

आँकड़ों के विश्लेषण से परिणामों के संबंध में जो निष्कर्ष प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं —

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक का मान 0.61 है जो कि परिमित धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक का मान 0.30 है जो

तालिका 3 — अभिभावकीय प्रोत्साहन, अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्राप्त सहसंबंध गुणांकों के अंतर की सार्थकता

N	अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध	अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध	अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत के मध्य सहसंबंध	't' मान	't' का क्रांतिक मान
100	0.61*	0.30*	0.49*	1.53*	1.98

*0.05 सार्थकता स्तर

कि दोनों चरों के मध्य धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है।

3. शैक्षिक उपलब्धि का अन्य दो चरों, अध्ययन आदत एवं अभिभावकीय प्रोत्साहन से लगभग समान सहसंबंध है।

अतः परिणामों के सूक्ष्म अवलोकन से स्पष्ट होता है कि निर्धारित शैक्षिक उपलब्धि, अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत से सार्थक रूप से एवं सकारात्मक रूप से सहसंबंधित है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. इस शोध अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट है कि अभिभावकीय प्रोत्साहन एवं अध्ययन आदत शैक्षिक उपलब्धि से सहसंबंधित है। अतः विद्यालय प्रबंधक, अभिभावक तथा शिक्षक इस अध्ययन के परिणामों का लाभ उठाकर, विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि में सुधार करने का प्रयास कर सकते हैं।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि करने के लिए उन्हें शिक्षकों अथवा विशेष परामर्शदाता के द्वारा उचित निर्देशन प्रदान करना चाहिए। जिससे वे अच्छी अध्ययन आदतों का विकास कर सकें और अकादमिक सफलता प्राप्त कर सकें।
3. विद्यार्थियों की अध्ययन आदत को सुधारा जा सकता है। अतः इसके सुधार हेतु शिक्षकों को विद्यार्थियों को इस प्रकार के कार्य देने चाहिए, जिसे वे स्वयं करके सीखें तथा उनमें पुस्तकालय जाने की प्रवृत्ति को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।
4. शैक्षिक उपलब्धि का अभिभावकीय प्रोत्साहन से गहरा संबंध है। अतः अभिभावक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनकी अध्ययन आदतों के संबंध में सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हुए विद्यार्थियों में आत्म-मूल्यांकन की प्रवृत्ति को विकसित करने का प्रयास कर सकते हैं।
5. अभिभावकों तथा शिक्षकों की अति आकांक्षा अभिवृत्ति विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित कर सकती है, अतःअभिभावकों तथा शिक्षकों, दोनों को विद्यार्थियों की रुचि और उनकी क्षमता को ध्यान में रखकर उनसे अपेक्षा करनी चाहिए।

संदर्भ

एबेल, उजू एफ़ और ओलोफ़ू पॉल, ए. 2017. स्टडी हैबिट एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन सेकंडरी, एकेडमिक परफ़ोर्मेंस इन बायॉलोजी इन द फेडरल कैपिटल टेरीटरी, अंबूजा. *एजुकेशनल रिसर्च एंड रिव्यूज़, एकेडमिक जर्नल्स*. वॉल्यूम 12 (10), पृ. 583–588.

कैटलन, एफ. 2013. *कॉलेज स्टडी हैबिट्स न्यूज़*. 12/03/2016 को www.studymode.com से लिया गया है.

कौर, अमनदीप और आर. पठानिया. 2017. स्टडी हैबिट्स एंड एकेडमिक परफ़ोर्मेंस अमंग लेट एडोलसेंस. *स्टडी ऑन होम एंड कम्युनिटी साइंस*. वॉल्यूम 9 इश्यू 1. 21/11/2017 को www.tandfoline.com से लिया गया है.

गुप्ता, रत्ना. 2016. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च*. 2 (9), पृ. 252–256.

जॉन, एम. 2010. *स्टूडेंट्स स्टडी हैबिट्स एंड स्टाइल्स*. 12/3/2016 को www.worldwidelearn.com से लिया गया है.

झा, के.के. और वाई भूटिया. 2012. माध्यमिक विद्यालयों में गणित के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और उपलब्धि. एडुट्रैक. नीलकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली.

निवेदिता और दीपिका. 2017. स्टडी ऑफ़ पेरेंटल इंकरेजमेंट इन रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ़ यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन सोशल साइंस*. वॉल्यूम 4, इश्यू 6. पृ. 64–72.

नेगी, अंजना और रमा मोखरी. 2016. पेरेंटल इंकरेजमेंट एंड एकेडमिक अचीवमेंट अमंग एडोलसेंस. *रिमार्किंग*. वॉल्यूम 2, इश्यू 8. पृ. 80–82.

पुजु, बिलकिस अब्दुल्ला. 2017. एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ़ एडोलसेंस इन रिलेशन टू पेरेंटल इंकरेजमेंट. *द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंडियन साइकॉलजी*. वॉल्यूम 4, इश्यू 3. पृ. 15–22.

भावना और मंदीप कौर. 2015. एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ़ एडोलसेन्ट्स इन रिलेशन टु पेरेंटल एंकरेजमेंट. *जर्नल ऑफ़ रिसर्च एंड मेथड इन एजुकेशन*. वॉल्यूम 5, इश्यू 3, मई-जून 2015. पृ. 30–36.

मार्क, ए. और सी. हावर्ड. 2009. *हाऊ टू स्टडी साइको साइंस*. 20 (4), पृ. 516–522

लारेंस, ए. एस. 2014. रिलेशनशिप बिट्वीन स्टडी हैबिट्स एंड एकेडमिक एचीवमेंट ऑफ़ हायर एंड सेकंडरी स्कूल स्टूडेंट्स. *इंडियन जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च*. वॉल्यूम 4, इश्यू 6. जून 2014. पृ. 143–145.

लारेंस, ए. एम. और सी. बराढ़ी. 2016. पेरेंटल एन्करेजमेंट इन रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ़ हायर सेकंडरी स्कूल स्टूडेंट्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस रिसर्च एंड इन्नोवेटिव आइडियाज़ इन एजुकेशन*. वॉल्यूम 2, इश्यू 6, पृ. 1234–1239.

सरना, ए मिगुल और पॉल्ल्यूश, सी. के. 2015. इन्फलूएंस ऑफ़ स्टडी हैबिट्स ऑन एकेडमिक परफ़ोर्मेंस ऑफ़ इंटरनेशनल कॉलेज स्टूडेंट्स इन शंघाई. *हायर एजुकेशन स्टडीज़*. वॉल्यूम 5, नं. 4, पृ. 42–55. कनेडियन सेंटर ऑफ़ साइंस एंड एजुकेशन.

सिंह, मंगल. 2016. रिलेशनशिप बिट्वीन एकेडमिक अचीवमेंट एंड पेरेंटल इंकरेजमेंट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंजीनियरिंग साइंस एंड कम्प्यूटिंग*. वॉल्यूम 6, इश्यू 4, पृ. 3695–3698.